



CTC(T&IT), CRPF



Monthly

e-Newsletter

July - 2024



Never stop learning, Because life never stop Teaching

INDEX

Contents

Title	Page no.
1. Chat GPT	- 1
2. Evolution Of Computers	- 5
3. Law of Social Media	- 7
5. Acknowledgement	- 16

Chief Patron

Sh. Harjinder Singh, DIGP, Principal

Editorial Advisory Board

Chairman Sh. Antony Jenson K J, Comdt.

Members

Sh. Aman Deep, DC
Sh. Anoop Kumar Verma, AC
Insp/T Harish Prasad Tamta
SI/T Deepak Jha
ASI/Ro Satender Singh Suhag
ASI/T Dilbagh Singh

Chief Editor Sh. Shitole Dhiraj Gorak , AC

Editor ASI/T Rajesh Rajput

Designing & Layout ASI/T Deepak

Photography Precels Cell

R&D Cell
Insp/C K Praveen Sagar
Insp/T Biju S T
Insp/Ro N.Anil
SI/T Virender Bisht
ASI/T Sudheer



Published by:-
CTC(T&IT), RANCHI



Chat GPT

अगर आप देश दुनिया की जानकारी रखने में दिलचस्पी रखते हैं तो आपको पता होगा कि Chat GPT का आगमन हो चुका है। यह एक आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस टूल है। जिसे दूसरा गूगल माना जा रहा है। तकनीकी क्षेत्र में जानकारी रखने वाले युवा और एक्सपर्ट्स लगातार सोशल साइट्स पर आजकल इसी की चर्चा कर रहे हैं। इस आर्टिकल में हम चैट जीपीटी के बारे में चर्चा करेंगे !

Chat GPT- AI की दुनिया में आपका नया Personal Assistant



- Chat GPT की शुरुआत 2015 में Sam Altman और Elon Musk ने की थी हालांकि अब वह इस Company से जुड़े नहीं हैं।
- Chat GPT को बनाने वाली Company [Open AI](#), [Artificial Intelligence](#) की दुनिया में एक जानी मानी Company हैं।
- आम लोगों ने 2020 में इसके बारे में जाना और 2022 में इसका Prototype Launch किया गया।

- Prototype का मतलब होता है किसी Product के Launch से पहले, उसका एक Sample बाज़ार में उतारा जाता है Product Testing के लिए।
- आंकड़ें बताते हैं कि अपने Launch के पहले ही महीने में Chat GPT के [57 Million Users](#) Already हो चुके थे।
- Chat GPT दो शब्दों के मेल से बना है, पहला है Chat और दूसरा है GPT.
- Chat का अर्थ हम सभी जानते हैं, इसका मतलब होता है आपस में बात करना; चाहे वो Digital Platforms पर की जाए या फिर आमने सामने किसी से की जाए।
- GPT का Full Form है Generative Pre-Trained Transformer.
- Chat GPT एक AI Tool है यानि Artificial Intelligence के साथ Design किया गया एक सॉफ्टवेयर है ।
- इसे आप जो कहें, जैसा कहें, वो आपको वैसा Content कुछ ही मिनटों में Generate करके दे सकता है।
- Chat GPT जैसे Tools Chatbot की श्रेणी में आते हैं, यह ऐसी मशीनें होती हैं जो इंसानों की बात समझकर खुद से उनके जवाब तैयार करती हैं।
- Chat GPT की एक खास बात यह है कि यह खुद से ही खुद को Improve कर सकता है , आइए इसे एक Example से समझते हैं –
- मान लीजिए आपको एक Youtube Video के लिए Research करना है, Script लिखनी है पर यहीं काम Chat GPT मिनटों में कर सकता है क्योंकि उसके पास पहले से ही Information Available है , इसे इन चीज़ों के लिए Pre- Train किया गया है। सिर्फ यहीं नहीं आप इससे Different Topic से जुड़े अलग अलग सवाल पूछ सकते हैं जैसे Website की Organic Traffic कैसे बढ़ाएं, घर बैठे पैसे कैसे कमाएं, Personalised Emails कैसे लिखें, इत्यादि। Chat GPT आपको बहुत ही सरल ढंग से इन सब सवालों के जवाब देगा वो भी आपकी चुनी हुई भाषा में।
-

Chat GPT कैसे काम करता है -

- एक AI Tool होने की वजह से Chat GPT Human Interaction और Behaviour को काफी अच्छे से समझ सकता है। साधारण भाषा में कहें तो जिस तरह इंसान किसी भी बात को सुनते हैं फिर उसे सोचते हैं फिर उसपर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, Chat GPT भी ठीक वैसे ही काम करता है।



- गौर करने वाली बात ये है कि हम किसी भी चीज़ को सोचने के लिए अपने दिमाग का इस्तेमाल करते हैं पर Machines के पास अपना दिमाग तो होता नहीं है, वह तो Commands पर Run करती हैं !
- ChatGPT आपके पूछे हुए प्रश्नों को अपने खुद के इंसानी दिमाग यानि AI की मदद से समझता है, अपने System में उसके उत्तर ढूँढता है और फिर आपके पूछे गए सवाल के हिसाब से अपने जवाब को Curate करता है और फिर आपकी चुनी हुई भाषा और Chosen Content Form में आपको जवाब दे देता है।
- अगर आप चाहें तो Chat GPT के द्वारा Generated Response को तुरंत ही किसी अन्य भाषा में Translate भी कर सकते हैं, Chat GPT में यह Features भी Available है।
- अब एक बड़ा सवाल यह कि आखिर Chat GPT जैसी Machines में Data आता कहा से है? तो AI अपना Basic Data Humans यानि इंसानों से ही Collect करते हैं।
- जब भी कोई Program Design किया जाता है तब Basic Data उसमें डाला जाता है और उसके बाद User Feedback के ज़रिए AI खुद को Improve करते करते और बेहतर होता जाता है।



- **Research** – Chat GPT का इस्तेमाल बहुत लोग Research के लिए करते हैं। काफी लोग इसे Search Engine की तरह भी इस्तेमाल करते हैं। बस फ़र्क इतना है कि यह Google की तरह आपको Data Source बताने की जगह खुद Data Collect करके एक Response Generate करके देता है।
- **Medical Diagnosis** – ChatGPT के इस Used Case को लेके काफी बवाल भी हुआ था। Chat GPT लोगों के Symptoms देखकर Diagnose करके Advisory Medication Recommend कर सकता है। Medical Data Availability और Patterns के हिसाब से यह AI Disease को Diagnose कर सकता है और Preferable Treatment बता सकता है। एक तरफ़ यह माना जा रहा है कि यह Doctors की काफी मदद कर सकता है तो वहीं इसे काफी Risky भी माना जा रहा है।

- **Translation** –ChatGPT अपने द्वारा Generated Response को अलग अलग भाषा में Translate कर सकता है। इसके अलावा Chat GPT आपके द्वारा दिए गए Content को भी किसी भी भाषा में Translate कर सकता है।

ChatGPT & Digital Marketing : ChatGPT का Digital Marketers पर Impact



- Chat GPT से जुड़े आंकड़ें बताते हैं कि Chat GPT की Parent Company Open AI 2024 के अंत तक [\\$ 200 Million](#) In Revenue Generate करेंगे।
- ChatGPT ने Digital Marketing के इसी सबसे Important Element में एक Revolution लाया है।
- Chat GPT Use In Hindi Discuss करते वक़्त हमने आपको बताया था कि ChatGPT कुछ ही Seconds में आपको किसी भी Type और Form का Content Create कर सकता है।
- लेकिन Content के अलावा भी ऐसे कई Areas हैं जिनमें ChatGPT Digital Marketers की काफ़ी मदद कर सकता है।
- **Customer Support** – एक Chatbot होने की वज़ह से ChatGPT आपके Customer Queries को Handle करने में पूरी तरह से सक्षम है वो भी बिना आपके Intervention के।
- ChatGPT आपके Customers की भाषा को समझ कर उन्हें उन्हीं की भाषा में जवाब दे सकता और साथ ही 24 *7 Available भी रह सकता है।
- **Personal Assistant** – इसके बारे में हमने ChatGPT Uses Discuss करते वक़्त भी बात की थी। As A Virtual Assistant Chat GPT का Use Reservations, Appointment Scheduling, Reminders, Data Analysis जैसी कई चीज़ों में आपकी मदद कर सकता है।

Benefits & Limitations Of ChatGPT - ChatGPT के फायदे और नुकसान



- **ChatGPT Uses** के बाद अब समझते हैं कि इसके क्या-क्या फ़ायदे हैं और इसमें क्या क्या कमियाँ हैं या इसके Limiting Factors क्या-क्या हैं!

• ChatGPT Benefits:

- **Multi – Tasker** – कैसा हो अगर कुछ यूँ हो कि कई सारे Employees का काम कोई एक कर ले वो भी उनसे कम पैसों में और छुट्टी भी ना माँगे !
- ChatGPT की साहयता से आप 24*7 किसी भी Type And Form Of Content को Generate कर सकते हैं।

- यह आपके लिए Research भी कर सकता, आपके Customer Care Representative की तरह काम भी कर सकता है, आपके Business के लिए नाम भी Suggest कर सकता है और ना जाने कितने ऐसे काम जिनके लिए काफ़ी वक्त और Employees की ज़रूरत पड़ती थी उसे ChatGPT अकेला ही कर सकता है।
- **Cost Effective** – जितने काम ChatGPT करता है उनके लिए शायद 10 से 12 Employees भी कम पड जाएँगे, ऐसे में यह AI Tool वर्तमान में Free Of Cost Available है।
- ऐसे में यह आपके Business की Cost Reduction में काफ़ी मदद कर सकता है। यह आपके Business Name Selection से लेकर, Website Designing तक और Value Addition से लेकर Marketing Campaign Design करने तक सबमें आपकी मदद कर सकता है।
- **User Friendly** – जब भी इस बारे में बात होती है कि चैट जीपीटी कैसे काम करता है, तो अक्सर लोगों के मन में सवाल आता है कि यह Google से अलग कैसे है? Chat GPT आपको Google Search की तरह अलग-अलग Website पर Direct नहीं करता बल्कि वो आपके पूछे गए सवाल का आपको एक सीधा जवाब बनाके देता है। इसलिए यह ज़्यादा User Friendly माना जाता है।

HC/RO - Anand Kumare singh
FFC , CTC (T&IT)

EVOLUTION OF COMPUTERS

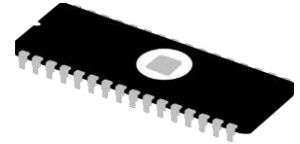
Computer generations

Vacuum tube – an electronic device that controls the flow of electrons in a vacuum. It used as a switch, amplifier, or display screen in many older model radios, televisions, computers, etc.



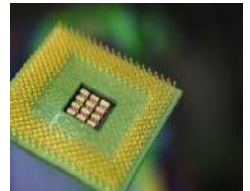
Transistor – an electronic component that can be used as an amplifier or as a switch. It is used to control the flow of electricity in radios, televisions, computers, etc.

Integrated circuit (IC) – a small electronic circuit printed on a chip (usually made of silicon) that contains many of its circuit elements (e.g. transistors, diodes, resistors, etc.).



Microprocessor – an electronic component on an integrated circuit containing a computer's central processing unit (CPU) and other associated circuits.

CPU (central processing unit) – It is often referred to as the brain or engine of a computer where most of the processing and operations take place (CPU is part of a microprocessor).



Magnetic drum – a cylinder coated with magnetic material, on which data and programs can be stored.

Magnetic core – uses arrays of small rings of magnetized material called cores to store information.

Machine language – a low-level programming language comprised of a collection of binary digits (ones and zeros) that the computer can read and understand. Assembly language is like the machine language that a computer can understand, except that assembly language uses abbreviated words (e.g. ADD, SUB, DIV...) in place of numbers (0s and 1s).



Memory – a physical device that stores data, information and programs in a computer.

Artificial intelligence (AI) – an area of computer science that deals with the simulation and creation of intelligent machines or intelligent behavior in computers (they think, learn, work, and react like humans).

Five Generations of Computers

Generations of computers	Generations timeline	Evolving hardware
First generation	1940s-1950s	Vacuum tube based
Second generation	1950s-1960s	Transistor based
Third generation	1960s-1970s	Integrated circuit based
Fourth generation	1970s-present	Microprocessor based
Fifth generation	The present and the future	Artificial intelligence based

First generation of Computers

The main characteristics of the first generation of computers (1940s-1950s)

Main electronic component – vacuum tube

Main memory – magnetic drums and magnetic tapes

Programming language – machine language

Power – consumes a lot of electricity and generates a lot of heat.

Speed and size – very slow and very large in size (often taking up an entire room).

Input/output devices – punched cards and paper tape.

Examples – ENIAC, UNIVAC1, IBM 650, IBM 701, etc.

Quantity – there were about 100 different vacuum tube computers produced between 1942 and 1963.



Second Generation of Computers

The main characteristics of second-generation of computers (1950s-1960s)

Main electronic component – transistor

Memory – magnetic core and magnetic tape / disk

Programming language – assembly language

Power and size – low power consumption, generated less heat, and smaller in size (in comparison with the first generation computers).

Speed – improvement of speed and reliability (in comparison with the first generation computers).

Input/output devices – punched cards and magnetic tape.

Examples – IBM 1401, IBM 7090 and 7094, UNIVAC 1107, etc.



Third Generation of Computers

The main characteristics of third generation of computers (1960s-1970s)

Main electronic component – integrated circuits (ICs)

Memory – large magnetic core, magnetic tape / disk

Programming language – high level language (FORTRAN, BASIC, Pascal, COBOL, C, etc.)



Size – smaller, cheaper, and more efficient than second generation computers (they were called minicomputers).

Speed – improvement of speed and reliability (in comparison with the second generation computers).

Input / output devices – magnetic tape, keyboard, monitor, printer, etc.

Examples – IBM 360, IBM 370, PDP-11, UNIVAC 1108, etc.



Fourth Generation of Computers

The main characteristics of fourth generation of computers (1970s-present)

Main electronic component – very large-scale integration (VLSI) and microprocessor.

VLSI– thousands of transistors on a single microchip.

Memory – semiconductor memory (such as RAM, ROM, etc.)

RAM (random-access memory) – a type of data storage (memory element) used in computers that temporarily stores programs and data (volatile: its contents are lost when the computer is turned off).

ROM (read-only memory) – a type of data storage used in computers that permanently stores data and programs (non-volatile: its contents are retained even when the computer is turned off).

Programming language – high level language (Python, C#, Java, JavaScript, Rust, Kotlin, etc.).

A mix of both third- and fourth-generation languages

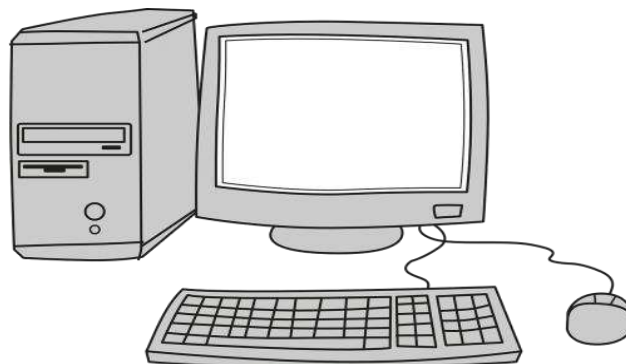
Size – smaller, cheaper and more efficient than third generation computers.

Speed – improvement of speed, accuracy, and reliability (in comparison with the third generation computers).

Input / output devices – keyboard, pointing devices, optical scanning, monitor, printer, etc.

Network – a group of two or more computer systems linked together.

Examples – IBM PC, STAR 1000, APPLE II, Apple Macintosh, etc.



Fifth Generation of Computers

The main characteristics of fifth generation of computers (the present and the future)

Main electronic component: based on artificial intelligence, uses the Ultra Large-Scale Integration (ULSI) technology and parallel processing method.

ULSI – millions of transistors on a single microchip

Parallel processing method – use two or more microprocessors to run tasks simultaneously.

Language – understand natural language (human language).

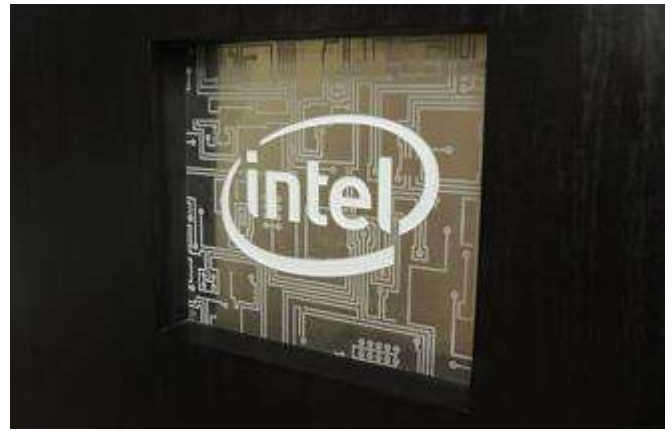
Power – consume less power and generate less heat.

Speed – remarkable improvement of speed, accuracy and reliability (in comparison with the fourth generation computers).

Size – portable and small in size, and have a huge storage capacity.

Input / output device – keyboard, monitor, mouse, trackpad (or touchpad), touchscreen, pen, speech input (recognise voice / speech), light scanner, printer, etc.

Example – desktops, laptops, tablets, smartphones, etc.



No.034031165
SI/C SHAIJU.K
FC CTC(T & IT)

सोशल मीडिया कानून और इसके निहितार्थ

परिचय



प्रौद्योगिकी के इस आधुनिक युग में, सोशल मीडिया दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण घटक बनता जा रहा है और आज अधिकांश युवा इसके माध्यम से अपने विचारों, और राय का संचार करना पसंद करते हैं। ऐसे कई सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैं जो उपयोगकर्ताओं को सामाजिक समाचार, ब्लॉग, और अन्य को आसान तरीके से एक्सेस करने की अनुमति देते हैं। व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली कुछ सोशल

मीडिया नेटवर्किंग साइट्स में इंस्टाग्राम, ट्विटर और फेसबुक शामिल हैं। वे अपने उपयोगकर्ताओं को लेखन, संगीत और छवियों के माध्यम से जानकारी को जल्दी और दूरी से प्रभावित हुए बिना साझा करने की अनुमति देकर सामाजिक संपर्क बढ़ाने में मदद करते हैं। इस तथ्य के बावजूद कि सोशल मीडिया का उपयोग करने के जबरदस्त लाभ हैं, गोपनीयता और सुरक्षा जैसे चिंता के कुछ क्षेत्र हैं जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है। सोशल मीडिया पर किसी व्यक्ति द्वारा पोस्ट की गई एक गलत या झूठी जानकारी समाज पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। मीडिया को विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के लोगों को सच्चाई प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और साथ ही नफरत और सांप्रदायिक समस्याओं को खत्म करने के लिए झूठी और गलत सूचनाओं के प्रसार को प्रतिबंधित करना चाहिए।

सोशल मीडिया कानून की आवश्यकता

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के अत्यधिक उपयोग के कारण इन दिनों उभर रहे अपराधों से निपटने के लिए सोशल मीडिया कानूनों की आवश्यकता है। ये कानून निषिद्ध सामग्री की सुरक्षा के लिए दीवानी और आपराधिक दोनों तरह से उपाय प्रदान करते हैं। सोशल मीडिया मुकदमेबाजी से जुड़े कई कानून हैं जिनमें साइबर अपराध या साइबरस्पेस समस्याओं को हल करने के लिए डिजिटल मिलेनियम कॉपीराइट एक्ट और कम्युनिकेशन डिसेंसी एक्ट शामिल हैं। सोशल मीडिया की गुमनामी और धोखाधड़ी के कारण, सभी उम्र के लोगों को प्रभावित करने वाली ऑनलाइन हिंसा में वृद्धि हुई है। पीछा करना, उत्पीड़न, धमकाने और धमकियों सहित सोशल मीडिया से संबंधित अपराधों को कम करने के लिए, सोशल मीडिया कानूनों की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, फेसबुक, यूट्यूब और व्हाट्सएप के माध्यम से फर्जी समाचार वीडियो हिंसा के प्रसार के कारण कुछ भारतीय राज्यों में हाल ही में हुए दंगों से गंभीर नुकसान हुआ है। यही कारण है कि हमारे देश में मजबूत सोशल मीडिया कानूनों की आवश्यकता है।

सोशल मीडिया से तात्पर्य

- **social networking sites** आज के इंटरनेट का एक अभिन्न अंग है जो दुनिया में एक अरब से अधिक लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है। यह एक ऑनलाइन मंच है जो उपयोगकर्ता को एक सार्वजनिक प्रोफाइल बनाने एवं वेबसाइट पर अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ सहभागिता करने की अनुमति देता है।
- प्रोफाइल का उपयोग अपने विचारों को साझा करने, पहचान के लोगों या अजनबियों से बात करने में किया जाता है। उदाहरण - फेसबुक, ट्विटर आदि इस संपूर्ण प्रक्रिया में वेबसाइट पर उपलब्ध उपयोगकर्ता की निजी सूचनाएँ भी साझा हो जाती हैं।

- यह पूरी प्रक्रिया सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित होती है, जहाँ विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है। उपयोग के बहु-विविध तरीके और तकनीकी निर्भरता ने 'सामाजिक संजाल स्थल' को विभिन्न प्रकार के खतरों के प्रति सुभेद्य किया है।

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

- सोशल मीडिया दुनिया भर के लोगों से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण साधन है और इसने विश्व में संचार को नया आयाम दिया है।
- सोशल मीडिया उन लोगों की आवाज़ बन सकता है जो समाज की मुख्य धारा से अलग हैं और जिनकी आवाज़ को दबाया जाता रहा है।
- वर्तमान में सोशल मीडिया कई व्यवसायियों के लिये व्यवसाय के एक अच्छे साधन के रूप में कार्य कर रहा है।
- सोशल मीडिया के साथ ही कई प्रकार के रोज़गार भी पैदा हुए हैं।
- वर्तमान में आम नागरिकों के बीच जागरूकता फैलाने के लिये सोशल मीडिया का प्रयोग काफी व्यापक स्तर पर किया जा रहा है।
- कई शोधों में सामने आया है कि दुनिया भर में अधिकांश लोग रोज़मर्रा की सूचनाएँ सोशल मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त करते हैं।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

- कई शोध बताते हैं कि यदि कोई सोशल मीडिया का आवश्यकता से अधिक प्रयोग किया जाए तो वह हमारे मस्तिष्क को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है और हमें डिप्रेशन की ओर ले जा सकता है।
- सोशल मीडिया साइबर-बुलिंग को बढ़ावा देता है।
- यह फेक न्यूज़ और हेट स्पीच फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- सोशल मीडिया पर गोपनीयता की कमी होती है और कई बार आपका निजी डेटा चोरी होने का खतरा रहता है।
- साइबर अपराधों जैसे- हैकिंग और फिशिंग आदि का खतरा भी बढ़ जाता है।
- आजकल सोशल मीडिया के माध्यम से धोखाधड़ी का चलन भी काफी बढ़ गया है, ये लोग ऐसे सोशल मीडिया उपयोगकर्ता की तलाश करते हैं जिन्हें आसानी से फँसाया जा सकता है।
- सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर सकता है

सोशल मीडिया और भारत

- सोशल मीडिया ने समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को भी समाज की मुख्य धारा से जुड़ने और खुलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया है।
- आँकड़ों के अनुसार, वर्तमान में भारत में तकरीबन 350 मिलियन सोशल मीडिया यूज़र हैं और अनुमान के मुताबिक, वर्ष 2023 तक यह संख्या लगभग 447 मिलियन तक पहुँच जाएगी।
- वर्ष 2019 में जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय उपयोगकर्ता औसतन 2.4 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते हैं।

- इसी रिपोर्ट के मुताबिक फिलीपींस के उपयोगकर्ता सोशल मीडिया का सबसे अधिक (औसतन 4 घंटे) प्रयोग करते हैं, जबकि इस आधार पर जापान में सबसे कम (45 मिनट) सोशल मीडिया का प्रयोग होता है।
- इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया अपनी आलोचनाओं के कारण भी चर्चा में रहता है। दरअसल, सोशल मीडिया की भूमिका सामाजिक समरसता को बिगाड़ने और सकारात्मक सोच की जगह समाज को बाँटने वाली सोच को बढ़ावा देने वाली हो गई है।
- भारत में नीति निर्माताओं के समक्ष सोशल मीडिया के दुरुपयोग को नियंत्रित करना एक बड़ी चुनौती बन चुकी है एवं लोगों द्वारा इस ओर गंभीरता से विचार भी किया जा रहा है।

सोशल मीडिया का दुरुपयोग

- आँकड़ों के अनुसार, वर्ष 2018-19 में फेसबुक, ट्विटर समेत कई साइटों पर 3,245 आपत्तिजनक सामग्रियों के मिलने की शिकायत की गई थी जिनमें से जून 2019 तक 2,662 सामग्रियाँ हटा दी गई थीं।
 - उल्लेखनीय है कि इनमें ज़्यादातर वह सामग्री थी जो धार्मिक भावनाओं और राष्ट्रीय प्रतीकों के अपमान का निषेध करने वाले कानूनों का उल्लंघन कर रही थी। इस अल्पावधि में बड़ी संख्या में आपत्तिजनक सामग्री का पाया जाना यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया का कितना ज़्यादा दुरुपयोग हो रहा है।
- दूसरी ओर सोशल मीडिया के ज़रिये ऐतिहासिक तथ्यों को भी तोड़-मरोड़ कर पेश किया जा रहा है। न केवल ऐतिहासिक घटनाओं को अलग रूप में पेश करने की कोशिश हो रही है बल्कि आज़ादी के सूत्रधार रहे नेताओं के बारे में भी गलत जानकारी बड़े स्तर पर साज़ा की जा रही है।
- विश्व आर्थिक मंच की रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया में सोशल मीडिया के माध्यम से गलत सूचनाओं का प्रसार कुछ प्रमुख उभरते जोखिमों में से एक है।
- यकीनन यह न केवल देश की प्रगति में रुकावट है, बल्कि भविष्य में इसके खतरनाक परिणाम भी सामने आ सकते हैं। अतः आवश्यक है कि देश की सरकार को इस विषय पर गंभीरता से विचार करते हुए इसे पूरी तरह रोकने का प्रयास करना चाहिये।

सोशल मीडिया और फेक न्यूज़ संबंधी नियम-कानून



- भारत में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पहले से ही [सूचना प्रौद्योगिकी \(IT\) अधिनियम, 2008](#) के दायरे में आते हैं।
- यदि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म को अदालत या कानून प्रवर्तन संस्थाओं द्वारा किसी सामग्री को हटाने का आदेश दिया जाता है तो उन्हें अनिवार्य

रूप से ऐसा करना होगा।

- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर रिपोर्टिंग तंत्र भी मौजूद हैं, जो यह पता लगाने का प्रयास करते हैं कि क्या कोई सामग्री सामुदायिक दिशा-निर्देशों का उल्लंघन कर रही है या नहीं और यदि वह ऐसा करते हुए पाई जाती है तो उसे प्लेटफॉर्म से हटा दिया जाता है।
- भारत में [फेक न्यूज़](#) को रोकने के लिये कोई विशेष कानून नहीं है। परंतु भारत में अनेक संस्थाएँ हैं जो इस संदर्भ में कार्य कर रही हैं-

- **प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया:** एक ऐसी ही नियामक संस्था है जो समाचार पत्र, समाचार एजेंसी और उनके संपादकों को उस स्थिति में चेतावनी दे सकती है यदि यह पाया जाता है कि उन्होंने पत्रकारिता के सिद्धांतों का उल्लंघन किया है।
- **न्यूज़ ब्रॉडकास्टर्स एसोसिएशन:** निजी टेलीविजन समाचार और करेंट अफेयर्स के प्रसारकों का प्रतिनिधित्व करता है एवं उनके विरुद्ध शिकायतों की जाँच करता है।
- **ब्रॉडकास्टिंग कंटेंट कंफ्लेंट काउंसिल:** टीवी ब्रॉडकास्टर्स के खिलाफ आपत्तिजनक टीवी कंटेंट और फर्जी खबरों की शिकायत स्वीकार करती है और उनकी जाँच करती है।

सोशल मीडिया के संबंध में भारतीय कानून के तहत उपाय

सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम

सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 (आईटी अधिनियम) भारत में ई-कॉमर्स और साइबर अपराध से संबंधित मामलों से निपटने के लिए एक प्राथमिक कानून है। इस अधिनियम का मुख्य उद्देश्य कागज़-आधारित संचार के बजाय इलेक्ट्रॉनिक डेटा एक्सचेंज या किसी अन्य माध्यम से किए गए लेन-देन को कानूनी मान्यता प्रदान करना है। यह डिजिटल हस्ताक्षरों को कानूनी मान्यता भी प्रदान करता है और ई-गवर्नेंस को सक्षम करने के लिए कानूनी प्रतिबंध देता है। इस कानून के तहत, कंप्यूटर या नेटवर्क से जुड़े विभिन्न धोखाधड़ी और अपराधों के लिए दंड निर्धारित किए गए हैं। इसके साथ ही, सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम में आईपीसी (भारतीय दंड संहिता) के कुछ प्रावधानों में संशोधन किया गया है जिसमें भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872, भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम 1934 और बैंकर बुक साक्ष्य अधिनियम 1891 शामिल हैं। आईटी अधिनियम की कुछ धाराएँ इस प्रकार सूचीबद्ध हैं:

- **धारा 66A :** आईटी अधिनियम की यह धारा किसी भी व्यक्ति को सोशल मीडिया पर संदेश भेजने या सामग्री पोस्ट करने पर गिरफ्तार करने की शक्ति देती है जिसे आपत्तिजनक माना जा सकता है। साथ ही, घृणा, झुंझलाहट, असुविधा, बाधा, खतरा, दुश्मनी, अपमान और आपराधिक धमकी फैलाने के उद्देश्य से कोई भी गलत या झूठी जानकारी भेजना अपमानजनक है। ऐसी गतिविधि दंडनीय है और कानून के अनुसार, अपराधी को जुर्माने के साथ तीन साल की कैद की सजा दी जाती है।
- **धारा 69A :** इस धारा के अनुसार, सरकार के पास ऐसी किसी भी सूचना की निगरानी, डिक्रिप्ट या अवरोधन करने का अधिकार है जो सरकार के प्रावधानों के अनुरूप नहीं है। यह अधिकारियों को उचित प्रक्रिया का पालन करके इंटरनेट साइटों को ब्लॉक करने का अधिकार देता है। हाल ही में चीनी ऐप्स पर प्रतिबंध आईटी अधिनियम की धारा 69A के तहत लगाया गया था। इस धारा के प्रावधानों का पालन न करने वाले को कारावास और जुर्माने से दंडित किया जाता है।
- आईटी एक्ट की धारा 67 जुर्माने के साथ साथ 3 सालों तक सज़ा जो बढ़ाया भी जा सकता है। आई पी सी की धारा 153 A, 153 B, 292, 295 A और 499 के तहत सोशल मीडिया और किसी व्यक्ति को अपमान जनक सन्देश और उसके खिलाफ ग़लत कमेंट करने पर सजा का प्रावधान है।
- **सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यवर्ती संस्थानों के लिये दिशा-निर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, 2021:** आईटी नियम (2021) सोशल मीडिया प्लेटफार्मों को सामग्री मॉडरेशन में अधिक परिश्रम करने, अनुचित सामग्री को तुरंत हटाकर ऑनलाइन सुरक्षा सुनिश्चित करने का आदेश देते हैं।

- उपयोगकर्ताओं को गोपनीयता नीतियों के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिये, कॉपीराइट सामग्री, अपमानजनक सामग्री या राष्ट्रीय सुरक्षा या मैत्रीपूर्ण संबंधों को खतरे में डालने वाली किसी भी चीज़ से बचना चाहिये।
- इन नियमों में **2023 के संशोधन** में कहा गया है कि फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और एयरटेल जैसे इंटरनेट सेवा प्रदाताओं सहित ऑनलाइन मध्यस्थों को भारत सरकार के बारे में गलत जानकारी के प्रसार को रोकना होगा।
- तीसरे पक्ष की सामग्री से कानूनी सुरक्षा बनाए रखने के लिये उन्हें **तथ्य-जाँच इकाइयों** द्वारा झूठ के रूप में चिह्नित सामग्री को भी हटा देना चाहिये।
- हालाँकि संशोधित प्रावधानों के कार्यान्वयन पर हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने रोक लगा दी।

हाल ही में भारत सरकार ने [सूचना प्रौद्योगिकी \(मध्यवर्ती संस्थानों के लिये दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता\) \[Information Technology \(Intermediary Guidelines and Digital Media Ethics Code\)\]](#) नियम या 'आईटी नियम 2021' में एक नया संशोधन पेश किया, जो इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय को झूठे या भ्रामक ऑनलाइन कंटेंट को चिह्नित करने के लिये एक 'फैक्ट चेक यूनिट' का सृजन करने की अनियंत्रित शक्ति प्रदान करता है।



सोशल मीडिया मध्यवर्ती संस्थाओं (Social Media intermediaries) द्वारा उपयोगकर्ताओं को फ्लैग्ड सूचना को होस्ट या पब्लिश करने से रोक सकने की विफलता के परिणामस्वरूप उनकी 'सेफ हार्बर' (Safe Harbour) प्रतिरक्षा वापस ली जा सकती है, जो फिर उन्हें आपराधिक वाद के दायरे में ला सकती है। भारत में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नागरिक

स्वतंत्रता पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

- नया नियम केंद्र सरकार को यह निर्धारित करने की शक्ति देता है कि कौन-सी सूचना झूठ या भ्रामक है और वे मध्यवर्ती संस्थानों के माध्यम से सेंसरशिप का प्रयोग कर सकते हैं। यह संविधान द्वारा गारंटीकृत मुक्त सूचना और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सिद्धांतों के विरुद्ध है।
- इंटरनेट युग में [भ्रामक सूचनाओं और फेक न्यूज़](#) का प्रसार एक प्रमुख समस्या है। इसके व्यक्तियों, समुदायों और यहाँ तक कि राष्ट्रों के लिये भी गंभीर परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं। भारत में सरकार ने आईटी नियमों में संशोधन के माध्यम से इस समस्या को संबोधित करने का प्रयास किया है। यद्यपि वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर इन संशोधनों के प्रभाव के बारे में चिंता व्यक्त की गई है।

आईटी नियम क्या हैं?

- आईटी नियम [सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000](#) से अपनी अधिकारिता प्राप्त करते हैं, जो इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स के लिये विधिक मान्यता प्रदान करता है।
- 'सेफ हार्बर' प्रावधान:
 - यह अधिनियम उन मध्यवर्ती संस्थानों के लिये एक 'सेफ हार्बर' प्रदान करता है जो अपने कर्तव्यों के निर्वहन में सम्यक तत्परता रखते हैं और राज्य द्वारा निर्धारित दिशानिर्देशों का पालन करते हैं।
- मध्यवर्ती संस्थाएँ:

- अधिनियम की धारा 79 मध्यवर्ती संस्थाओं को प्रतिरक्षा प्रदान करती है, जब तक कि वे सम्यक तत्परता और राज्य-निर्धारित दिशानिर्देशों का पालन करते रहते हैं।
- मध्यवर्ती संस्थाओं में व्हाट्सएप, ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म शामिल हैं।
- **प्रथम प्रवर्तक (First Originator):**
 - आईटी नियम दायित्वों को मध्यवर्ती संस्थाओं पर लागू करते हैं और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के लिये आवश्यक बनाते हैं कि वे कुछ परिस्थितियों में अपनी सेवा पर किसी भी सूचना के प्रथम प्रवर्तक की पहचान करने के लिये तकनीकी समाधान प्रदान करें।
 - आईटी नियम कई तरह की चुनौतियों के अधीन रहे हैं और इस संबंध में कई याचिकाएँ भारत के सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष विचाराधीन हैं।

क्या हैं नए नियम?

- वर्ष 2021 के आईटी नियमों ने पिछले दिशानिर्देशों को प्रतिस्थापित कर दिया है और मध्यवर्ती संस्थाओं और डिजिटल समाचार मीडिया को विनियमित करने का प्रयास किया है।
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के लिये आवश्यक बनाया गया है कि किसी भी सूचना के प्रथम प्रवर्तक की पहचान करने के लिये तकनीकी समाधान प्रदान करें, जिसके निजता को खतरा पहुँचता है।
- अप्रैल 2023 में पेश किये गए संशोधन सरकार को स्वयं यह तय कर सकने की शक्ति देते हैं कि कौन-सी सूचना झूठ है और वे मध्यवर्ती संस्थाओं को फेक या झूठ समझी जाने वाली पोस्ट को हटाने के लिये विवश करने के रूप में सेंसरशिप की व्यापक शक्तियों का प्रयोग कर सकते हैं।
- नए नियम विधान के बजाय कार्यकारी आदेश के माध्यम से अभिव्यक्ति को प्रतिबंधित कर भारत में वाक् स्वतंत्रता और नागरिक स्वतंत्रता को खतरे में डालते हैं।
 - **भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19(1)(a)** प्रत्येक नागरिक को वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान करता है, जिसे केवल अनुच्छेद 19(2) में निर्धारित आधार पर विधि द्वारा अपनाए गए उचित प्रतिबंधों के माध्यम से ही सीमित किया जा सकता है।
- फेक न्यूज़ और भ्रामक सूचना ऐसे आधार नहीं हैं जिन पर वाक् को सीमित किया जा सकता है, जबकि आईटी नियमों में किये गए संशोधन उनके द्वारा लगाए गए किसी भी तरह के अवरोधों की चेतावनी नहीं देते हैं।
- 'फैक्ट चेक यूनिट' के पास यह तय करने की असीम शक्तियाँ हैं कि कौन-सी सूचना झूठी है और सोशल मीडिया मध्यवर्ती संस्थाओं को इन निष्कर्षों के आधार पर कार्रवाई करने के लिये मजबूर करती है, जो 'ओपन-एंडेड' और अपरिभाषित हैं।
 - सोशल मीडिया की उपयोगिता और विश्वसनीयता में सुधार के लिये क्या उपाय किये जा सकते हैं?
- **एल्गोरिथम पारदर्शिता:** पूर्वाग्रहों को कम करने तथा सामग्री दृश्यता में सुधार करने के लिये प्लेटफॉर्मों को अपने एल्गोरिथम की कार्यप्रणाली का खुलासा करने और समझाने की आवश्यकता है।
 - जवाबदेही बढ़ाने के लिये प्लेटफॉर्मों को सामग्री मॉडरेशन, डेटा प्रथाओं और नियामक मानकों के अनुपालन पर नियमित पारदर्शिता रिपोर्ट प्रकाशित करने की आवश्यकता है।

- **डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम:** गलत सूचना और [ऑनलाइन उत्पीड़न](#) की पहचान करने तथा उससे निपटने में उपयोगकर्ताओं को सशक्त बनाने के लिये व्यापक डिजिटल साक्षरता संबंधी शिक्षा को लागू करना।
- **AI मॉडरेशन उपकरण:** अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए हानिकारक सामग्री का तेज़ी से पता लगाने और उसे हटाने के लिये सामग्री मॉडरेशन के लिये उन्नत AI उपकरण विकसित करना।
- **गोपनीयता-बढ़ाने वाली प्रौद्योगिकियाँ:** उपयोगकर्ता की गोपनीयता और सुरक्षा को मज़बूत करने के लिये **एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन** तथा **डेटा अनामीकरण** जैसी प्रौद्योगिकियों में निवेश करना।
- **नैतिक डिज़ाइन प्रथाएँ:** नैतिक डिज़ाइन प्रथाओं को प्रोत्साहित करना जो उपयोगकर्ता के ध्यान को अधिकतम करने के बजाय उपयोगकर्ता के हित, मानसिक स्वास्थ्य और सार्थक जुड़ाव को प्राथमिकता देती हैं।
- **सकारात्मक सामग्री निर्माण को पुरस्कृत करना:** सूचनात्मक, शैक्षिक या समुदाय-निर्माण सामग्री बनाने वाले उपयोगकर्ताओं को प्रोत्साहित करने के लिये तंत्र लागू करना।
 - भारत का **राष्ट्रीय रचनाकार पुरस्कार 2024** इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

Acknowledgement

We are highly thankful for reading out this compilation and hope it will be useful for you in day to day professional and personal life. We would like to hear your interest areas, suggestions from you to make this newsletter more informative and interesting. Your views will definitely help us to create this newsletter as an effective medium to reach you with latest development in the fields of communication and technology.

R&D Team
CTC T&IT CRPF, Ranchi, Jharkhand
ctcit@crpf.gov.in